INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VI(2nd lang.)	Department: Hindi	
Worksheet No: 9	**Topic: Paragraph Worksheet**	**Note: Pl. file in portfolio**

प्र 1 - निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए :-

नदी के किनारे पड़ा एक दूधिया पत्थर कहता है, "मुझे इतना गोल और चमकीला देखकर आप सोच रहे होंगे कि मैं इतना गोल और चमकीला कैसे हूँ ? क्या सभी पत्थर मेरे जैसे ही होते हैं ? नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है।" उसने आगे कहना शुरू किया , " पहले मैं एक बहुत बड़े पहाड़ का हिस्सा था। तेज़ वर्षा - तूफान ने मुझे अपने पिता से अलग कर दिया। अपने घर - परिवार से टूटने के बाद मैं बहुत दुखी हुआ।" उस समय मेरा शरीर टेढ़ा - मेढ़ा था । मेरे किनारे बहुत नुकीले और खुरदरे थे। मुझ पर किसी का भी ध्यान नहीं जाता था।

कुछ समय बाद एक आदमी आया। उसके पास एक बड़ी मशीन थी । उस मशीन की आवाज़ डरावनी थी और मैं उससे बहुत डर रहा था । मशीन ने बहुत सारी चट्टानों को तोड़ डाला था। मैं सोच रहा था मेरा अंत कैसा होगा ? मशीन का एक भाग एक पत्थर से टकरा कर खराब हो गया। उस मशीन को जब वापस ले जाया जा रहा था तो मुझे एक टक्कर लगी और मैं छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गया।

पत्थर कहता है - मैं कई महीनों तक ऐसे ही बिखरा पड़ा रहा । वहाँ लोग आते-जाते थे | जिसके दिल में आता वही मुझे ठोकर मार कर आगे बढ़ जाता। इसी तरह ठोकर खाते - खाते अपने भाग्य पर आँसू बहाते हुए मैं एक झरने में आ पड़ा । झरना मुझे अपने तेज़ बहाव के साथ खींचते - घसीटते ले गया और जाकर नदी में मिल गया ।

पहाड़ी नदी बहुत तेज़ गति से वह रही थी। उसका तेज़ बहाव मुझे बुरी तरह से रगड़ रहा था। उस रगड़ से मेरा पोर- पोर दुखने लगता । लेकिन कुछ ही दिनों में मुझे इसकी आदत हो गई। पत्थर कहता है - "मुझे मेरी तपस्या का यह फल मिला कि मैं चिकना और चमकदार हो गया था।" मैदान में पहुँचकर पहाड़ी नदी की शरारतें और उसकी चंचलता भी शांत हो गई थी । हाँ वह बिलकुल शांत हो चुकी थी। अब उसका बहाव मेरे शरीर को सहलाता था।

नदी तल में पड़े - पड़े कई जीवों के साथ मेरी दोस्ती भी हो गई थी। वे मुझे इधर-उधर लुढ़काकर खेलते । उनकी दुनिया बड़ी रोमांचक थी। एक दिन नदी के शांत वातावरण में एक उथल-पुथल हुई कि मैं कब किनारे पर आ गया मुझे पता ही नहीं चला। नदी के जल में स्वयं को देखकर मैं हैरान रह गया। जीवन के उतार-चढ़ाव में मेरा रूप इतना बदल गया था कि मैं अपने आप को ही पहचान न सका । लोग अब मुझे कंकड़ कहने लगे थे- एक गोल और चमकदार कंकड़ जिसे लोग हाथ में लेकर सहलाते , उसके ठंडे , चिकने रूप की प्रशंसा करते । मैंने इस रूप को प्राप्त करने के लिए कितनी मेहनत की है यह सिर्फ मैं ही जानता हूँ ।

प्रश्न - 1 - नदी के किनारे पड़ा एक दूधिया पत्थर क्या कहता है ?

उत्तर - पत्थर कहता है, "मुझे इतना गोल और चमकीला देखकर आप सोच रहे होंगे कि मैं इतना गोल और चमकीला कैसे हूँ ? क्या सभी पत्थर मेरे जैसे ही होते हैं ? नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है।"

प्रश्न - 2 - पत्थर पहले किसका हिस्सा था ? किस ने उसे उसके पिता से अलग कर दिया ?

उत्तर - पत्थर पहले एक बहुत बड़े पहाड़ का हिस्सा था। तेज़ वर्षा - तूफान ने उसे अपने पिता से अलग कर दिया।

प्रश्न- 3 - मशीन कैसी थी ? और उसने क्या किया था ?

उत्तर **-** मशीन बड़ी थी । उसकी आवाज़ डरावनी थी। उसने बहुत सारी चट्टानों को तोड़ डाला था।

प्रश्न -4- पत्थर कब तक बिखरा पड़ा रहा ? वहाँ आते- जाते लोग क्या करते थे ?

उत्तर - पत्थर कई महीनों तक ऐसे ही बिखरा पड़ा रहा । वहाँ आते- जाते लोगों में से जिसके दिल में आता वही उसे ठोकर मार कर आगे बढ़ जाता।

प्रश्न - 5 - झरने ने क्या किया था ?

उत्तर - झरना पत्थर को अपने तेज़ बहाव के साथ खींचते - घसीटते ले गया और जाकर नदी में मिल गया ।

प्रश्न - 6 - पहाड़ी नदी की गति कैसी थी ? उसके बहाव के कारण क्या हुआ ?

उत्तर पहाड़ी नदी की गति बहुत तेज़ थी। उसका तेज़ बहाव उसे बुरी तरह से रगड़ रहा था। उस रगड़ से पत्थर का पोर- पोर दुखने लगा था ।

प्रश्न - 7 - तपस्या का फल किसे और क्या मिला था ?

उत्तर- तपस्या का फल पत्थर को मिला था और यह कि वह चिकना और चमकदार हो गया था।"

प्रश्न - 8 - मैदान में पहुँचकर पहाड़ी नदी में क्या बदलाव आया ?

उत्तर - मैदान में पहुँचकर पहाड़ी नदी की शरारतें और उसकी चंचलता भी शांत हो गई थी। हाँ वह बिलकुल शांत हो चुकी थी। अब उसका बहाव मेरे शरीर को सहलाता था।

प्रश्न - 9 - नदी के जल में स्वयं को देखकर कंकड़ हैरान क्यों रह गया ?

उत्तर - नदी के जल में स्वयं को देखकर वह इसलिए हैरान रह गया क्योंकि जीवन के उतार-चढ़ाव में उसका रूप इतना बदल गया था कि वह अपने- आप को ही पहचान न सका था ।

प्रश्न - 10 - लोग अब उसे क्या कहने लगे थे ?

उत्तर - लोग अब उसे कंकड़ कहने लगे थे- एक गोल और चमकदार कंकड़ जिसे लोग हाथ में लेकर सहलाते , उसके ठंडे , चिकने रूप की प्रशंसा करते ।